शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी र-ज़वी دامت برکاتہم العالیہ

तख़रीज शुदा

KAFANCHORON KE INKISHAFAT (Hindi)

कफ़न चोरों के इन्किशाफ़ात

एक कफ़न चोर की आपबीती 1

शराबी का अन्जाम 6

जवानी में तौबा का इन्आ़म 8

क़ब्र के पेट में जज़ा व सज़ा का सिल्सिला होता है 10

अ़ज़ाबे क़ब्र का क़ुरआन से सुबूत 12

हम क्यूं परेशान हैं ? 16

बे नमाज़ी की सोह़बत से बचो ! 23

पेशकश : मजलिसे मक-त-बतुल मदीना

مکتبۃ المدینہ मक-त-बतुल मदीना

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा अहमदआबाद-1. गुजरात, इन्डिया

Ph:91-79-25391168 E-mail:maktabahind@gmail.com, www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्म व ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (اَلْمُسْتَطْرَف ج۱ص۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

कफ़न चोरों के इन्किशाफ़ात

येह रिसाला **(कफ़न चोरों के इन्किशाफ़ात)**

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब या ई-मेइल) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)
मक-त-बतुल मदीना
सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा,
अह़मदआबाद-1, गुजरात,
MO. 9374031409
E-mail : maktabahind@gmail.com

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

कफ़न चोरों के इन्किशाफ़ात

शैत़ान लाख सुस्ती दिलाए मगर येह रिसाला (32 स-फ़ह़ात) मुकम्मल पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ **नमाज़ों और नेकियों की रग़बत और गुनाहों की नफ़रत बढ़ेगी ।**

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

ख़ातिमुल मुर्सलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अ़नीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने दिल नशीन है : जब जुमा'रात का दिन आता है **अल्लाह** तआ़ला फ़िरिश्तों को भेजता है जिन के पास चांदी के काग़ज़ और सोने के क़लम होते हैं वोह लिखते हैं कौन **यौमे जुमा'रात** और **शबे जुमुआ़** मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ता है । (कन्ज़ुल उ़म्माल, जिल्द : 1, स-फ़ह़ा : 250, रक़म : 2174, दारुल कुतुबिल इ़ल्मिय्या, बैरूत)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(1) एक कफ़नचोर की आपबीती

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه के दस्ते मुबारक पर एक ऐसे **कफ़न चोर** ने तौबा की जिस ने सेंकड़ों कफ़न चुराए थे। ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه के इस्तिफ़्सार पर उस ने तीन[3] क़ब्रों के **पुर अस्रार वाक़ेआ़त** बयान किये। चुनान्चे उस ने कहा,

आग की ज़न्जीरे

एक बार मैं ने एक क़ब्र खोदी तो उस में एक दिल हिला देने वाला मन्ज़र था। क्या देखता हूं कि **मुर्दे का चेहरा सियाह है, हाथ पांव में आग की ज़न्जीरे हैं और उस के मुंह से ख़ून और पीप जारी है।** नीज़ उस से इस क़दर बदबू आ रही थी कि दिमाग़ फटा जा रहा था। येह ख़ौफ़नाक मन्ज़र देख कर मैं डर कर भागने ही वाला था कि **मुर्दा बोल** पड़ा : क्यूं भागता है? आ, और सुन कि मुझे किस गुनाह की सज़ा मिल रही है! मैं मुर्दे की पुकार सुन कर ठिठक कर खड़ा हो गया और तमाम हिम्मत इकठ्ठी कर के क़ब्र के क़रीब गया और जब अन्दर झांक कर

देखा तो अ़ज़ाब के फ़िरिश्ते उस की गरदन में **आग की ज़न्जीरे** बांधे बैठे थे। मैं ने मुर्दे से पूछा : तू कौन है ? उस ने जवाब दिया : ''मैं मुसल्मान इब्ने मुसल्मान हूं मगर अफ़्सोस ! मैं **शराबी** और **ज़ानी** था और इसी बदमस्ती की ह़ालत में मरा और अ़ज़ाब में गरिफ़्तार हो गया।'' अपना बयान जारी रखते हुए उस कफ़न चोरने मज़ीद बताया :

काला मुर्दा

एक और मौक़अ़ पर जब कफ़न चुरानेकी ग़रज़ से मैं ने क़ब्र खोदी तो **एक काला मुर्दा ज़बान निकाले खड़ा हो गया ! उस के चारों त़रफ़ आग लपक रही थी, फ़िरिश्ते उस के गले में ज़न्जीरे बांधे खड़े थे।** उस शख़्स ने मुझे देखते ही पुकारा : ''भाई ! मैं सख़्त प्यासा हूं मुझे थोड़ा सा पानी पिला दो।'' फ़िरिश्तों ने मुझ से कहा : ख़बरदार ! इस **बे नमाज़ी** को पानी मत देना। फिर मैंने हिम्मत कर के उस मुर्दे से पूछा : तू कौन था और तेरा जुर्म क्या है ? उस ने जवाब दिया : ''मैं मुसल्मान था मगर अफ़्सोस ! मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बहुत ना

फ़रमानियां की हैं और मेरी त़रह़ बहुत से गुनहगार अ़ज़ाब में गरिफ़्तार हैं।'' उस ने मज़ीद कहा :

क़ब्र में बाग़

इसी त़रह़ एक दफ़्अ़ मैं ने एक क़ब्र खोदी तो **क़ब्र को अन्दर से बहुत ही वसीअ़ पाया और देखा कि एक निहायत ही ख़ुशनुमा बाग़ है जिस में नहरें बेह रही हैं और एक ह़सीनो जमील नौ जवान उस बाग़ में मज़ें लूट रहा है।** मैं ने उस नौ जवान से पूछा : तुझे किस अ़मल के सबब येह इन्आ़म मिला है ? वोह बोला : मैं ने एक वाइ़ज़ से सुना था कि जो शख़्स **आशूरा के रोज़ छ⁶ रक़्अ़त** नफ़्ल पढ़े **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की मग़्फ़िरत फ़रमा देता है। लिहाज़ा मैं हर साल आशूरा के दिन छ⁶ रक्अ़ते पढ़ा करता था। (माख़ूज़न राह़तुल क़ुलूब, स-फ़ह़ा : 85, शब्बीर बिरादर्ज़ मर्कज़ुल औलिया लाहौर)

(2) भयानक क़ब्रें

एक बार ख़लीफ़ा अ़ब्दुल मलिक के पास एक शख़्स घबराया हुवा ह़ाज़िर हुवा और केहने लगा : **आ़ली जाह !** मैं

बेहद गुनहगार हूं और जानना चाहता हूं कि मेरे लिये मुआ़फ़ी भी है या नहीं ? **ख़लीफ़ा** ने कहा : क्या तेरा गुनाह ज़मीनो आस्मान से भी बड़ा है ? उस ने कहा : बड़ा है। **ख़लीफ़ा** ने पूछा : क्या तेरा गुनाह लौहो क़लम से भी बड़ा है ? जवाब दिया : बड़ा है । पूछा : क्या तेरा गुनाह अ़र्शो कुर्सी से भी बड़ा है ? जवाब दिया : बड़ा है । **ख़लीफ़ा** ने कहा : भाई यक़ीनन तेरा गुनाह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रहमत से तो बड़ा नहीं हो सकता । येह सुन कर उस के सीने में थमा हुवा तूफ़ान आंखों के ज़रीए उमंड आया और वोह दहाड़ें मार मार कर रोने लगा । **ख़लीफ़ा** ने कहा : भई आख़िर मुझे पता भी तो चले कि तुम्हारा गुनाह क्या है ? इस पर उस ने कहा : **हुज़ूर !** मुझे आप को बताते हुए बेहद नदामत हो रही है ताहम अ़र्ज़ किये देता हूं, शायद मेरी तौबा की कोई सूरत निकल आए । येह कह कर उस ने अपनी **दास्ताने दहशत निशान** सुनानी शुरूअ़ की । कहने लगा : आ़लीजाह ! मैं एक **कफ़न चोर** हूं । आज रात मैं ने **पांच क़ब्रों** से इ़ब्रत हासिल की और तौबा पर आमादा हुवा ।

शराबी का अन्जाम

कफ़न चुराने की ग़रज़ से मैं ने जब **पहली क़ब्र** खोदी तो मुर्दे का मुंह क़िब्ला से फिरा हुवा था मैं ख़ौफ़ज़दा हो कर जूं ही पल्टा कि एक ग़ैबी आवाज़ ने मुझे चौंका दिया। कोई कह रहा था : ‘‘इस मुर्दे से अ़ज़ाब का सबब तो दरयाफ़्त कर ले।’’ मैं ने घबरा कर कहा। मुझ में हिम्मत नहीं, तुम ही बताओ ! आवाज़ आई : येह शख़्स **शराबी** और **ज़ानी** था।

ख़िन्ज़ीर नुमा मुर्दा

दूसरी[2] क़ब्र खोदी तो एक दिल हिला देने वाला मन्ज़र मेरी आंखों के सामने था क्या देखता हूं कि **मुर्दे का मुंह ख़िन्ज़ीर जैसा हो चुका है और त़ौक़ व ज़न्जीर में जकड़ा हुवा है।** ग़ैब से आवाज़ आई : येह **झूटी क़समें** खाता और **ह़राम रोज़ी** कमाता था।

आग की कीलें

तीसरी[3] क़ब्र खोदी तो उस में भी एक भयानक मन्ज़र था। **मुर्दा गुद्दी की त़रफ़ ज़बान निकाले हुए था और उस के**

जिस्म में आग की कीलें ठुकी हुई थीं । ग़ैबी आवाज़ ने बताया : येह **ग़ीबत** करता, **चुग़ली** खाता और लोगों को आपस में **लड़वाता** था।

आग की लपट में

चौथी[4] क़ब्र खोदी तो मेरी निगाहों के सामने एक बेहद सनसनी ख़ैज़ मन्ज़र था ! **मुर्दा आग में उलट पलट हो रहा था और फ़िरिश्ते उस को आग के गुर्ज़ों** (या'नी आतशी हथोड़ों) **से मार रहे थे ।** मुझ पर एक दम दहशत त़ारी हो गई और मैं भाग खड़ा हुवा। मगर मेरे कानों में एक ग़ैबी आवाज़ गूंज रही थी कि येह बद नसीब **नमाज़** और **रौज़ए र-मज़ान** में सुस्ती किया करता था।

जवानी में तौबा का इन्आ़म

पांचवीं[5] क़ब्र जब खोदी तो उस की ह़ालत गुज़श्ता चारों क़ब्रों से बिल्कुल बर अक्स थीं । **क़ब्र ह़द्दे नज़र तक वसीअ़ थी, अन्दर एक तख़्त पर ख़ूब रू नौ जवान बैठा हुवा था ।** ग़ैबी आवाज़ ने बताया : इस ने जवानी में तौबा कर ली

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुझ पर कस्रत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है।

थी और नमाज़ व रोज़े का सख़्ती से पाबन्द था।

(माख़ूज़ अज़ तज़्किरतलु वाइज़ीन, स-फ़ह़ा : 612, कोइटा)

(3,4) खोपड़ी में सीसा भरा हुवा था

ह़ज़रते अ़ब्दुल मो'मिन बिन अ़ब्दुल्ला बिन ईसा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि एक **कफ़न चोर** जिस ने तौबा कर ली थी, उस से मैं ने दरयाफ़्त किया कि कफ़नचोरी के दौर में अगर तुम ने कोई **सनसनी ख़ैज़ चीज़** देखी हो तो बताओ। इस पर उस ने कहा कि मैं ने एक बार एक शख़्स की क़ब्र खोदी तो उस के तमाम जिस्म में कीलें ठुकी हुई थीं और एक बड़ी **कील** उस के सर में जब कि दूसरी दोनों[2] टांगों के बीच में पैवस्त थी। एक और **कफ़न चोर** से दरयाफ़्त किया गया तो उस ने बताया कि **मैं ने एक खोपड़ी देखी जिस में शीशा पिघला कर भरा गया था।** (शर्हुस्सुदूर, ब शरहे ह़ालल मौती वल क़ुबूर, स-फ़ह़ा : 173, मर्कज़े अहले सुन्नत बरकाते रज़ा, हिन्द)

(5) पुर अस्रार अन्धा

एक **अन्धा भिकारी** था जो अपनी आंखें छुपाए रखता

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जो मुझ पर एक मरतबा दुरूद शरीफ़ पढ़ता है अल्लाह तआला उस के लिये एक क़ीरात़ अज्र लिखता है और क़ीरात़ उहुद पहाड़ जितना है।

था। उस का सुवाल करने का अन्दाज़ बड़ा अ़जीब था, वोह लोगों से कहता : "जो मुझे कुछ देगा उस को एक अ़जीब बात सुनाऊंगा और जो ज़ाइद देगा उस को एक अ़जीब चीज़ भी दिखाऊंगा।" अबू इस्ह़ाक़ इब्राहीम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : किसी ने उस को कुछ दिया तो मैं उस के पास खड़ा हो गया। **उस ने अपनी आंखें दिखाईं, मैं येह देख कर ह़ैरान व शश्दर रह गया कि उस की आंखों की जगह दो सूराख़ थे जिन से आरपार नज़र आता था।** अब उस ने अपनी दास्ताने ह़ैरत निशान सुनानी शुरूअ़ की, कहने लगा : मैं अपने शहर का नामी गिरामी **कफ़न चोर** था और लोग मुझ से बेह़द ख़ौफ़ज़दा रहते थे। इत्तिफ़ाक़ से शहर का **क़ाज़ी** (या'नी जज) बीमार पड़ गया, उस को जब अपने बचने की उम्मीद न रही तो उस ने मुझे सो दीनार भिजवा कर कहला भेजा कि मैं उन सो दीनारों के ज़रीए़ अपना कफ़न तुझ से मह़फ़ूज़ करना चाहता हूं। मैं ने ह़ामी भर ली। इत्तिफ़ाक़न वोह तन्दुरुस्त हो गया मगर कुछ अ़रसे के बा'द

फिर बीमार हो कर मर गया। मैं ने सोचा कि वोह अ़ति्य्या तो पहले मरज़ का था। लिहाज़ा मैं ने उस की क़ब्र खोद डाली। क़ब्र में अ़ज़ाब के आसार थे और **क़ाज़ी** (जज) **क़ब्र में बैठा हुवा था और उस के बाल बिखरे हुए थे और आंखें सुर्ख़ हो रही थीं। इतने में मैं ने अपने घुटनों में दर्द महसूस किया और एक दम किसीने मेरी आंखों में उंगलियां घोंप कर मुझे अन्धा कर दिया और कहा :** ऐ बन्दए ख़ुदा ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के भेदों पर क्यूं मुत्तलअ़ होता है ? (शरहुस्सुदूर, स-फ़हा : 180)

दरिन्दे के पेट में भी जज़ा व सज़ा का सिल्सिला होता है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! क़ब्र का अ़ज़ाब ह़क़ है। अ़ज़ाबे क़ब्र दर अस्ल अ़ज़ाबे बरज़ख़ ही को कहते हैं। इसे **अ़ज़ाबे क़ब्र** इस लिये कहते हैं कि उ़मूमन लोग क़ब्र ही में दफ़्न होते हैं वरना ख़्वाह कोई शख़्स जल जाए, डूब जाए, उस को मछलियां खा जाएं, जंगल में दरिन्दे फाड़ खाएं, कीड़े मकोड़े खा जाएं, या हवा में उस की राख उड़ा दी जाए हर सूरत में उस के साथ जज़ा व सज़ा का सिल्सिला होगा।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم जब तुम मुर्सलीन عَلَیۡہِمُ السَّلَام पर दुरूदे पाक पढ़ो तो मुझ पर भी पढ़ो बेशक मैं तमाम जहानों के रब का रसूल हूं।

बरज़ख़ के मा'ना

बरज़ख़ के लफ़्ज़ी मा'ना आड़ और पर्दा के हैं और मरने के बा'द से ले कर क़ियामत में उठने तक का वक़्फ़ा बरज़ख़ कहलाता है। चुनान्चे बरज़ख़ के मुतअ़ल्लिक़ पारह 18 सूरए मुअमिनून आयत नम्बर 100 में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

وَمِنْ وَّرَآىِٕهِمْ بَرْزَخٌ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ ﴿۱۰۰﴾ (پ : ۱۸، المؤمنون ۱۰۰)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और उन के आगे एक आड़ है उस दिन तक जिस दिन उठाए जाएंगे।

हज़रते सय्यिदुना मुजाहिद رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ इस आयत की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं कि : مَابَيْنَ الْمَوْتِ اِلَى الْبَعْثِ या'नी बरज़ख़ से मुराद मौत से ले कर क़ियामत के दिन दोबारा उठाए जाने की मुद्दत है। (तफ़्सीरे त़बरी जिल्द : 9, दारुल कुतुबिल इल्मिय्या बैरूत)

अ़ज़ाबे क़ब्र का कुरआन से सुबूत

अ़ज़ाबे क़ब्र कुरआने पाक से साबित है। चुनान्चे पारह 29 सूरए नूह आयत नम्बर 25 में ह़ज़रते सय्यिदुना नूह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की ना फ़रमान क़ौम के तूफ़ान में ग़रक़ होने

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم जिसने मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआ़ला उस पर सौ रह़मतें भेजता है।

के बा'द अ़ज़ाबे क़ब्र में मुब्तला होने का इस त़रह़ बयान है :

مِمَّا خَطِيٰٓـئٰتِهِمْ اُغْرِقُوْا فَاُدْخِلُوْا نَارًا ۙ

(پ: ۲۹، نوح، آیت: ۲۵)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : अपनी कैसी ख़त़ाओं पर डबोए गए फिर आग में दाख़िल किए गए।

इस आयते मुबारका के इस ह़िस्से "फिर आग में दाख़िल किए गए" की त़फ़्सीर में लिखा है : इस आग से मुराद **बरज़ख़** की आग है मुराद **अज़ाबे क़ब्र** है या'नी उन को क़ब्र के अन्दर आग में झोंका गया। (रूहुल मआ़नी जुज़ 29, स-फ़हा : 125, वग़ैरा एह्याइत्तिरासुल अ़रबी, बैरूत)

अज़ाबे क़ब्र के मुतअ़ल्लिक़ पारह 24 सूरतुल मो'मिन आयत नम्बर 46 में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

اَلنَّارُ يُعْرَضُوْنَ عَلَيْهَا غُدُوًّا وَّعَشِيًّا ۚ وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ ۫ اَدْخِلُوْٓا اٰلَ فِرْعَوْنَ اَشَدَّ الْعَذَابِ ﴿۴۶﴾

(پ: ۲۴، المؤمنون، آیت: ۴۶)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : आग जिस पर सुब्ह़ो शाम पेश किये जाते हैं। और जिस दिन क़ियामत क़ाइम होगी हुक्म होगा फ़िरऔ़न वालों को सख़्त तर अ़ज़ाब में दाख़िल करो।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلم जिसने मुझ पर रोजे़ जुमुआ़ दो सौ बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सौ साल के गुनाह मुआ़फ़ होंगे।

इस आयत में वाज़ेह़ त़ौर पर **अ़ज़ाबे क़ब्र** का बयान है इस त़रह़ की अशद्दुल अ़ज़ाब "या'नी सख़्ततर अ़ज़ाब" से जहन्नम का अ़ज़ाब मुराद है जो क़ियामत के दिन होगा इस से पहले जो अ़ज़ाब है वोह अ़ज़ाब, **अ़ज़ाबे क़ब्र** है। (उ़म्दतुल क़ारी, जिल्द : 2, स-फ़ह़ा : 862, फ़रीद बुक स्टॉल मर्कज़ुल औलिया, लाहौर)

अ़ज़ाबे क़ब्र का तज़्किरा करते हुए पारह 11 सूरतुत्तौबा आयत नम्बर 101 में इर्शाद होता है :

سَنُعَذِّبُهُمْ مَّرَّتَيْنِ ثُمَّ يُرَدُّوْنَ اِلٰى عَذَابٍ عَظِيْمٍ ﴿۱۰۱﴾

(پ : ۱۱ ، التوبۃ ، آیت : ۱۰۱)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : जल्द हम उन्हें दोबारा अ़ज़ाब करेंगे फिर बड़े अ़ज़ाब की त़रफ़ फेरे जाएंगे।

मुनाफ़िक़ीन की रुस्वाई

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ تعالیٰ عنہما मज़्कूरा आयते मुबारका की तफ़्सीर करते हुए फ़रमाते हैं कि **रसूलुल्लाह** صلی اللہ تعالیٰ علیہ و الہٖ وسلم ने जुमुआ़ के दिन ख़ुत़्बा दिया और इर्शाद फ़रमाया : "ऐ फ़ुलां खड़े हो जा और निकल जा क्यूं कि तू

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلى الله تعالى عليه واله وسلم जो शख़्स मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया।

मुनाफ़िक़ है।" आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने **मुनाफ़िक़ों** का नाम ले ले कर उन को मस्जिद से निकाल दिया और उन को खूब रुस्वा किया। फिर **ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म** رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ मस्जिद में दाख़िल हुए तो एक शख़्स ने **ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म** رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से कहा : आप को खुश ख़बरी हो, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आज मुनाफ़िक़ीन को ज़लीलो रुस्वा कर दिया है।" **ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास** رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि मस्जिद से ज़लील हो कर निकाला जाना पहला अ़ज़ाब था और दूसरा अ़ज़ाब, अ़ज़ाबे क़ब्र है। (तफ़्सीरे त़बरी, जिल्द : 6, स-फ़ह़ा : 457, दारुल कुतुबिल इ़ल्मिय्या बैरूत, उ़म्दतुल क़ारी, जिल्द : 6, स-फ़ह़ा : 274, दारुल फ़िक्र बैरूत, नुज़्हतुल क़ारी, जिल्द : 2, स-फ़ह़ा : 862)

अ़ज़ाबे क़ब्र का ह़दीस से सुबूत

अ़ज़ाबे क़ब्र के सुबूत में बे शुमार अह़ादीसे मुबारका वारिद हैं। इन में से सिर्फ़ एक ह़दीसे पाक पेशे ख़िदमत है चुनान्चे सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार, बि इज़्ने परवर्द गार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, शहन्शाहे अबरार

صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : عَذَابُ الْقَبْرِ حَقٌّ या'नी क़ब्र का अ़ज़ाब ह़क़ है । (सुननुन्नसाई, स-फ़ह़ा : 225, ह़दीस : 1305, दारुल कुतुबिल इ़ल्मिय्या, बैरूत)

सदरुश्शरीआ़, बदरुत्त़रीक़ा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : **अ़ज़ाबे क़ब्र का इन्कार वोही करेगा जो गुमराह है ।**

(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा अव्वल, स-फ़ह़ा : 57, मक-त-बतुल मदीना बाबुल मदीना कराची)

हम क्यूं परेशान हैं ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ हम मुसल्मान हैं और मुसल्मान का हर काम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के ह़बीब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़ुश्नूदी के लिये होना चाहिये । मगर अफ़्सोस ! आज हमारी अक्सरिय्यत नेकी के रास्ते से दूर होती जा रही है, शायद इसी वजह से हमें त़रह़ त़रह़ की परेशानियों का सामना है। कोई बीमार है तो कोई क़र्ज़दार, कोई घरेलू नाचाक़ियों का शिकार है तो कोई तंगदस्त व बे रोज़गार, कोई औलाद का त़लबगार है तो कोई ना फ़रमान औलाद की वजह से बेज़ार ।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم जिसने मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआ़ला उस पर सौ रह़मतें भेजता है।

अल ग़-रज़ हर एक किसी न किसी मुसीबत में गरिफ़्तार है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ुरआने पाक में इर्शाद फ़रमाता हैं :

وَمَآ اَصَابَكُمْ مِّنْ مُّصِيْبَةٍ فَبِمَا كَسَبَتْ اَيْدِيْكُمْ وَيَعْفُوْا عَنْ كَثِيْرٍ ۝

(پ : ۲۵ ، الشوریٰ ، آیت : ۳۰)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और तुम्हें जो मुसीबत पहुंची वोह इस सबब से है जो तुम्हारे हाथों ने कमाया और बहुत कुछ तो मुआ़फ़ फ़रमा देता है।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! यक़ीनन दुन्या व आख़िरत की हर परेशानी का ह़ल अल्लाह तआ़ला और उस के **ह़बीब** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की फ़रमां बरदारी में है। मन्क़ूल है : مَنْ كَانَ لِلّٰهِ كَانَ اللّٰهُ لَهٗ या'नी "जो शख़्स अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़रमां बरदार बन जाता है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस का कारसाज़ व मददगार बन जाता है।" (تفسیر روح البیان،سورۃ لقمان،تحت الایۃ:٤ ج٧ص٦٤)

नमाज़ की ब-र-कतें

मुसल्मानों के लिये सब से पहला फ़र्ज़ नमाज़ है मगर अफ़्सोस कि आज हमारी मस्जिदें वीरान हैं। यक़ीनन **नमाज़** दीन का सुतून है, **नमाज़** अल्लाह तआ़ला की ख़ुश्नूदी का सबब है, **नमाज़** से रह़मत नाज़िल होती है, **नमाज़** से गुनाह

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم तुम जहां भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है।

मुआ़फ़ होते हैं, **नमाज़** बीमारियों से बचाती है। **नमाज़** दुआ़ओं की क़बूलिय्यत का सबब है, **नमाज़** से रोज़ी में ब-र-कत होती है, **नमाज़** अंधेरी क़ब्र का चराग़ है, **नमाज़** अ़ज़ाबे क़ब्र से बचाती है, **नमाज़** मीठे मीठे आक़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की आंखों की ठन्डक है। नमाज़ी को ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त नसीब होगी और नमाज़ी के लिये सब से बड़ी ने'मत येह है कि उसे बरोज़े क़ियामत अल्लाह तआ़ला का दीदार होगा।

बे नमाज़ी का हौलनाक अन्जाम

बे नमाज़ी से अल्लाह तआ़ला नाराज़ होता है। जो जानबूझ कर एक **नमाज़** छोड़ देता है उस का नाम जहन्नम के दरवाज़े पर लिख दिया जाता है। **नमाज़** में सुस्ती करने वाले को क़ब्र इस त़रह़ दबाएगी कि उस की पसलियां टूट फूट कर एक दूसरे में पैवस्त हो जाएगी, उस की क़ब्र में आग भड़का दी जाएगी और उस पर एक गन्जा सांप **मुसल्लत़** कर दिया जाएगा।

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जिसने मुझ पर दस मर्तबा सुब्ह़ और दस मर्तबा शाम दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी।

नीज़ क़ियामत के रोज़ उस का ह़िसाब सख़्ती से लिया जाएगा।

सर कुचलने की सज़ा

सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से फ़रमाया : आज रात दो[2] शख़्स (या'नी जिब्राईल व मीकाईल عليهما السلام) मेरे पास आए और **मुझे** अरज़े मुक़द्दसा में ले आए। मैं ने देखा कि **एक शख़्स पथ्थर उठाए खड़ा है और पै दर पै पत्थर से उस का सर कुचल रहा है, हर बार कुचलने के बा'द सर फिर ठीक हो जाता है।** मैं ने उन फ़िरिश्तों से कहा : سُبْحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! येह कौन हैं ? उन्हों ने अ़र्ज़ की : आगे तशरीफ़ ले चलिये (मज़ीद मनाज़िर दिखाने के बा'द) फ़िरिश्तों ने अ़र्ज़ की : पहला शख़्स जो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने देखा (या'नी जिस का सर कुचला जा रहा था) **येह वोह था जिस ने क़ुरआन याद कर के छोड़ दिया था और फ़र्ज़ नमाज़ों के वक़्त सो जाने का आ़दी था। उस के साथ येह बरताव**

क़ियामत तक होगा। (सहीहुल बुख़ारी, जिल्द : 1, स-फ़हा : 467, 425, हदीस : 1386,7047 ब इख़्तिसार)

क़ब्र में आग के शो'ले

एक शख़्स की बहन फ़ौत हो गई। जब वोह उसे दफ़्न कर के लौटा तो याद आया कि रक़म की थैली क़ब्र में गिर गई है चुनान्चे वोह अपनी बहन की क़ब्र पर आया और उस को खोदा ताकि थेली निकाल ले। उस ने देखा कि **बहन की क़ब्र में आग के शो'ले भड़क रहे हैं।** चुनान्चे उस ने जूं तूं क़ब्र पर मिट्टी डाली और ग़मगीन रोता हुवा मां के पास आया और पूछा : प्यारी अम्मी जान! मेरी बहन के आ'माल कैसे थे? वोह बोली : बेटा क्यूं पूछते हो? अ़र्ज़ की : "मैं ने अपनी बहन की क़ब्र में आग के शो'ले भड़कते देखे हैं।" येह सुन कर मां रोने लगी और कहा : अफ़्सोस! तेरी बहन **नमाज़** में सुस्ती किया करती थी और नमाज़ के अवक़ात गुज़ार कर पढ़ा करती थी (या'नी नमाज़ क़ज़ा कर के पढ़ती थी) (मुकाशफ़तुल क़ुलूब, स-फ़हा : 189, दारुल कुतुबिल इ़ल्मिय्या, बैरूत)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم जिसने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़फ़ार करते रहेंगे।

हौलनाक कुंवां

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जब नमाज़ों को **क़ज़ा** कर के पढ़ने की सज़ा येह है तो सिरे से नमाज़ न पढ़ने वालों का किस क़-दर ख़ौफ़नाक अन्जाम होगा। **याद रखिये !** जो कोई जान बूझ कर नमाज़ को **क़ज़ा** कर के पढ़ेगा वोह ''वेल'' का मुस्तहिक़ है। **वेल** जहन्नम में एक ख़ौफ़नाक वादी है जिस की सख़्ती से ख़ुद जहन्नम भी पनाह मांगता है। नीज़ जहन्नम में एक ''ग़य्य'' नामी वादी है उस की गरमी और गहराई सब से ज़ियादा है उस में एक **हौलनाक कुंवां** है जिस का नाम ''हबहब'' है जब जहन्नम की आग बुझने पर आती है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस कुंवें को खोल देता है जिस से वोह बदस्तूर भड़कने लगती है येह **हौलनाक कुंवां बे नमाज़ियों, ज़ानियों, शराबियों, सूदख़ोरों और मां बाप को ईज़ा देने वालों के लिये है।** (बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 3, स-फ़ह़ा : 2, मक-त-बतुल मदीना बाबुल मदीना कराची)

जहन्नम में जाने का हुक्म

मन्क़ूल है कि क़ियामत के दिन एक शख़्स को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में खड़ा किया जाएगा, अल्लाह तबारक तआ़ला उसे जहन्नम में जाने का हुक्म फ़रमाएगा। वोह अ़र्ज़ करेगा : **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मुझे किस लिये जहन्नम में भेजा जा रहा है ? इर्शाद होगा : नमाज़ों को उन का वक़्त गुज़ार कर पढ़ने और मेरे नाम की झूटी क़समें खाने की वजह से। (मुकाशफ़तुल क़ुलूब, स-फ़ह़ा : 189, दारुल कुतुबिल इ़ल्मिय्या, बैरूत)

सियाह ख़च्चर नुमा बिच्छू

मन्क़ूल है, जहन्नम में एक वादी है जिस का नाम "लमलम" है, उस में ऊंट की गरदन की त़रह़ **मोटे मोटे सांप** हैं, हर सांप की लम्बाई एक माह की मसाफ़त के बराबर है। जब येह सांप **बे नमाज़ी** को डसेगा तो उस का ज़हर उस के जिस्म में **सत्तर साल** तक जोश मारता रहेगा। और **जहन्नम** में एक वादी है जिस का नाम "जब्बुल हुज़्न" है इस में **काले ख़च्चर की मानिन्द बिच्छू** हैं। इस के सत्तर[70] डंक हैं और हर डंक में

ज़हर की थेली है। वोह **बिच्छू** जब **बे नमाज़ी** को डंक मारता है तो उस का ज़हर उस के सारे जिस्म में सरायत कर जाता है और उस ज़हर की गरमी **एक हज़ार साल** तक रहती है। इस के बा'द उस की हड्डियों से गोश्त झड़ता है और उस की शर्मगाह से पीप बहने लगती है और तमाम जहन्नमी उस पर ला'नत भेजते हैं।

(क़ुर्रतुल उ़यून मअ़हू अर्रोज़ुल फ़ाइक़, स-फ़ह़ा : 385, कोइट)

बे नमाज़ी की सोह़बत से बचो !

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن नमाज़ तर्क करने के अ़ज़ाब और बे नमाज़ी की सोह़बत में बैठने की मुमानअ़त करते हुए फ़तावा र-ज़विय्या जिल्द 9 स-फ़ह़ा 158 ता 159 पर फ़रमाते हैं : **जिस ने क़स्दन एक वक़्त की** (नमाज़) **छोड़ी हज़ारों बरस जहन्नम में रहने का मुस्तह़िक़ हुवा,** जब तक तौबा न करे और इस की क़ज़ा न कर ले, मुसल्मान अगर उस की ज़िन्दगी में उसे (या'नी उस बे नमाज़ी को) यकलख़्त

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जो शख़्स मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया।

(बिलकुल) छोड़ दें उस से बात न करें, उस के पास न बैठें, तो ज़रूर वोह (बे नमाज़ी) इस (बायकाट) का सज़ावार (या'नी लाइक़) है। (बे नमाज़ी चूंकी ज़ालिम है इस लिये उस की सोह्बत से बचने की ताकीद मज़ीद करते हुए सय्यिदी आ'ला हज़रत ने कुरआनी आयत पेश की है चुनान्चे लिखा है के) अल्लाह तआला फ़रमाता है :

وَاِمَّا يُنْسِيَنَّكَ الشَّيْطٰنُ فَلَا تَقْعُدْ بَعْدَ الذِّكْرٰى مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۶۸﴾
(پ : ۷، الانعام، آیت : ۶۸)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और जो कहीं तुझे शैतान भुलावे तो याद आए पर ज़ालिमों के पास न बैठ।

क़ज़ा उम्री का आसान त़रीक़ा

मीठे मीठे इस्लामी भाईयो ! हमेशा नमाज़े बा जमाअ़त का एहतिमाम कीजिये हरगिज़ कोताही न फ़रमाइये। जिन के ज़िम्मे **क़ज़ा नमाज़ें** हैं सच्ची तौबा कर के अदा करने की तरकीब करें। इस ज़िम्न में **मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत** हिस्सा अव्वल स-फ़ह़ा 70 ता 71 से **अ़र्ज़** व **इर्शाद** मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये : बा'ज़ ह़ाज़िरीन ने **अ़र्ज़** किया कि "हुज़ूर दुन्यवी मकरूहात ने ऐसा घेरा है कि रोज़ इरादा करता हूं आज **क़ज़ा नमाज़ें** अदा करना शुरूअ़ करूंगा मगर नहीं होता ! क्या यूं अदा करूं कि

पहले तमाम नमाज़े फ़ज्र की अदा कर लूं फिर ज़ोहर की। फिर और अवक़ात की, तो कोई ह़-रज है ? मुझे येह भी याद नहीं कि कितनी नमाज़े **क़ज़ा** हुई हैं। ऐसी ह़ालत में क्या करना चाहिये ? इर्शाद : क़ज़ा नमाज़ें जल्द से जल्द अदा करना लाज़िम है, न मा'लूम किस वक़्त मौत आ जाए, क्या मुश्किल है कि **एक दिन की बीस[20]** रक्अ़तें होती हैं (या'नी फ़ज्र की दो[2] रक्अ़त फ़र्ज़ और ज़ोहर की चार[4] फ़र्ज़ और अ़स्र की चार[4] फ़र्ज़ और मग़रिब की तीन[3] फ़र्ज़ और इ़शा की सात रक्अ़त या'नी चार[4] फ़र्ज़ और तीन[3] वित्र) इन नमाज़ों को सिवाए तुलूअ़ व ग़ुरूब व ज़वाल के (कि इस वक़्त सज्दा ह़राम है) हर वक़्त अदा कर सकता है और इख़्तियार है कि पहले फ़ज्र की सब नमाज़ें अदा कर लें, फिर ज़ोहर, फिर अ़स्र फिर मग़रिब, फिर इ़शा की या सब नमाज़ें साथ साथ अदा करता जाए और उन का ऐसा ह़िसाब लगाए कि तख़्मीना (या'नी अन्दाज़े) में बाक़ी न रह जाएं ज़ियादा हो जाएं तो ह़-रज नहीं और वोह सब ब क़-दरे ताक़त रफ़्ता रफ़्ता जल्द अदा कर ले, काहिली न करे। जब तक फ़र्ज़ ज़िम्मे पर बाक़ी

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم जिसने मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआ़ला उस पर सौ रह़मतें भेजता है।

रहता है कोई नफ़्ल क़बूल नहीं किया जाता। निय्यत इन नमाज़ों की इस त़रह़ हो म-सलन **सो[100] बार की फ़ज्र क़ज़ा** है तो हर बार यूं कहे कि "सब से पहले जो फ़ज्र मुझ से क़ज़ा हुई" हर दफ़्अ़ येही कहे। या'नी जब एक अदा हुई तो बाक़ियों में जो सब से पहली है। इसी त़रह़ ज़ोहर वग़ैरा हर नमाज़ में निय्यत करे। जिस पर बहुत सी नमाज़ें क़ज़ा हों इस के लिये सूरते तख़्फ़ीफ़ (या'नी कमी की सूरत) और जल्द अदा होने की येह है कि ख़ाली रक्अ़तों (या'नी ज़ोहर, अ़स्र व इ़शा की आख़िरी दो और मग़रिब के फ़र्ज़ की तीसरी रक्अ़त) में बजाए अल ह़म्द शरीफ के तीन बार سُبْحٰنَ اللّٰہ कहे, अगर एक बार भी कह लेगा तो फ़र्ज़ अदा हो जाएगा नीज़ तस्बीह़ाते रूकूअ़ व सुजूद में सिर्फ़ एक एक बार سُبْحَانَ رَبِّیَ الْعَظِیْم और سُبْحَانَ رَبِّیَ الْاَعْلٰی पढ़ लेना काफ़ी है। तशह्हुद के बा'द दोनों दुरूद शरीफ़ के बजाए اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِہٖ । **वित्रों** में बजाए दुआ़ए क़ुनूत के رَبِّ اغْفِرْلِیْ कहना काफ़ी है। तुलूए़ आफ़्ताब के बीस मिनट बा'द और ग़ुरूबे आफ़्ताब से बीस मिनट क़ब्ल नमाज़ अदा कर

सकता है। इस से पहले या इस से बा'द ना जाइज़ है। हर ऐसा शख़्स जिस के ज़िम्मे नमाज़ें बाक़ी हैं छुप कर पढ़े कि गुनाह का ए'लान जाइज़ नहीं। (या'नी येह ज़ाहिर करना गुनाह है कि मुझ पर क़ज़ा नमाज़ें हैं या मैं क़ज़ा नमाज़ें पढ़ रहा हूं वगै़रा)

इसी सिल्सिले में (सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत ने मज़ीद) इर्शाद फ़रमाया : अगर किसी शख़्स के ज़िम्मे **तीस**[30] या **चालीस**[40] साल की नमाज़ें हैं वाजिबुल अदा, उस ने अपने इन ज़रूरी कामों के इ़लावा जिन के बिगै़र गुज़र नहीं कारोबार तर्क कर के पढ़ना शुरूअ़ किया और पक्का इरादा कर लिया कि कुल नमाज़ें अदा कर के (ही) आराम लूंगा और फ़र्ज़ कीजिये इसी ह़ालत में एक महीना या एक दिन ही के बा'द उस का इन्तिक़ाल हो जाए तो **अल्लाह** तआ़ला अपनी रह़मते कामिला से उस की सब नमाज़ें अदा कर देगा। क़ालल्लाहु तआ़ला : (या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है) :

وَمَنْ يَّخْرُجْ مِّنْۢ بَيْتِهٖ مُهَاجِرًا اِلَى اللّٰهِ ثُمَّ يُدْرِكْهُ الْمَوْتُ فَقَدْ وَقَعَ اَجْرُهٗ عَلَى اللّٰهِ (پ: ۵، النِّسَاء، آیت: ۱۰۰)

तरज-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और जो अपने घर से निकला अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) व रसूल की त़रफ़ हिजरत करता फिर उसे मौत ने आ लिया तो उस का सवाब अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) के ज़िम्मे पर हो गया।

बे नमाज़ी तेरी शामत आएगी
क़ब्र की दीवार बस मिल जाएगी
तोड़ देगी क़ब्र तेरी पसलियां
दोनों[2] हाथों की मिलें जूं उंगलियां
उ़म्र में छूटी है गर कोई नमाज़
जल्द अदा कर ले तू आ ग़फ़्लत से बाज़

कर ले तौबा रब عَزَّوَجَلَّ की रह़मत है बड़ी
क़ब्र में वरना सज़ा होगी कड़ी

मज़ीद तफ़्सीलात के लिये मक-त-बतुल मदीना का मत़्बूआ़ रिसाला ''क़ज़ा नमाज़ का त़रीक़ा'' मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये।

ग़ाफ़िल दरज़ी

एक इस्लामी भाई के बयान का ख़ुलासा है : मैं जिन दिनों पन्जाब में दरज़ी का काम करता था, मेरा किरदार مَعَاذَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इन्तिहाई ख़राब था, नमाज़ की बिल्कुल तौफ़ीक़ न थी, लड़ाई भड़ाई तक़रीबन रोज़ मर्रा का मा'मूल था, झूट, ग़ीबत, वा'दा

ख़िलाफ़ी, गुस्सा, गालम गलोच, चोरी, बद निगाही, फ़िल्में डिरामे देखना, गाने बाजे सुनना, राह चलती लड़कियों को छेड़ख़ानी करना, मां बाप को सताना, अल ग़-रज़ वोह कौन सी बुराई थी जो मुझ में न थी। मेरी बद आ'मालियों से तंग आ कर मेरे घर वालों ने मुझे बाबुल मदीना कराची भेज दिया।

मैं ने बाबुल मदीना (कराची) के एक कारख़ाने में मुलाज़मत इख़्तियार कर ली, वहां लड़कियां भी काम करती थीं, इस लिये मेरी आ़दतें मज़ीद बिगड़ गईं। मैं इस क़दर बुरा बन्दा था कि कभी कभी तो ख़ुद अपने आप से घिन आती थी। एक रोज़ मुझे पता चला कि मेरे मामूं ज़ाद भाई दा'वते इस्लामी के इदारे, **जामिअ़तुल मदीना** (गुलिस्ताने जौहर, कराची) में दर्से निज़ामी कर रहे हैं। मैं उन से मिलने पहुंचा तो वोह इन्तिहाई पुर तपाक त़रीक़े से मुझ से मिले, उन्हों ने इन्फ़िरादी कोशिश करते हुए मुझे **दा'वते इस्लामी** के **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** की दा'वत पेश की, जो मैं ने क़बूल कर ली। जब मैं इज्तिमाअ़ में ह़ाज़िर हुवा तो वहां मुझे किसी ने **मक-त-बतुल मदीना** के

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم जिसने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़फ़ार करते रहेंगे।

मत़्बूआ़ रसाइल ''**बुढ्ढा पुजारी**'' और ''**कफ़नचोर के इन्किशाफ़ात**'' तोह़फ़े में दिये।

मैं ने क़ियामगाह पर आ कर जब वोह पढ़े तो पहली बार एह़सास हुवा कि मैं अपनी ज़िन्दगी बरबाद कर रहा हूं। मैं ने उसी वक़्त गुनाहों से **तौबा** की और पन्ज वक़्ता **बा जमाअ़त नमाज़** पढ़ने की निय्यत कर ली और हर जुमा'रात पाबन्दी के साथ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के आलमी म-दनी मर्कज़ फैज़ाने मदीना में होने वाले **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में शिर्कत करने लगा। सिल्सिलए आ़लिय्या क़ादिरिय्या र-ज़विय्या में दाख़िल हो कर **ग़ौसे पाक** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का मुरीद भी बन गया। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मेरी ज़िन्दगी में **म-दनी इन्क़िलाब** बरपा हो गया। मामूंज़ाद भाई की इन्फ़िरादी कोशिश की ब-र-कत से **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र की भी सआ़दत ह़ासिल हुई। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **आ़शिक़ाने रसूल** की सोह़बत की ब-र-कत से मै **दा'वते इस्लामी** के

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالی علیہ والہ وسلم जो मुझ पर रोजे़ जुमुआ़ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं कि़यामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा।

म-दनी माह़ोल से वाबस्ता हो गया और ता दमे बयान जामिअ़तुल मदीना में **दर्से निज़ामी** (या'नी आ़लिम कोर्स) के द-र-जए सानिया का त़ालिबे इ़ल्म हूं। अल्लाह तबारक व तआ़ला मेरी म-दनी तह़रीक दा'वते इस्लामी को हमेशा नज़रे बद से मह़फ़ूज़ रखे कि इस की ब-र-कत से मुझ जैसा गन्दी नाली का कीड़ा इ़ज़्ज़त व आबरू के साथ इ़ल्मे दीन ह़ासिल करने में मश्गूल हो गया।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

येह रिसाला पढ़ कर दूसरों को दे दीजिये

शादी ग़मी की तक़रीबात, इज्तिमआ़त, अअ़रास और जुलूसे मीलाद वग़ैरा में मक-त-बतुल मदीना के शाएअ़ कर्दा रसाइल और म-दनी फूलों पर मुश्तमिल पेम्फ़्लेट तक़्सीम कर के सवाब कमाइये। गाहकों को ब निय्यते सवाब तोह़फ़े में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाइल रखने का मा'मूल बनाइये, अख़्बार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए़ अपने मह़ल्ले के घर घर में माहाना कम अज़् कम एक अ़दद सुन्नतों भरा रिसाला या म-दनी फूलों का पेम्फ़्लेट पहुंचा कर नेकी की दा'वत की धूमें मचाइये।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

786 फ़ेहरिस्त 92

उ़न्वान	सफ़हा	उ़न्वान	सफ़हा
कफ़न चोरों के इन्किशाफ़ात	1	दरिन्दे के पेट में भी जज़ा व सज़ा का सिल्सिला होता है	10
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	1	बरज़ख़ के मा'ना	11
(1) एक कफ़नचोर की आपबीती	2	अ़ज़ाबे क़ब्र का कुरआन से सुबूत	12
आग की ज़ंजीरे	2	मुनाफ़िक़ीन की रुस्वाई	14
क़ब्र में बाग़	4	अ़ज़ाबे क़ब्र का ह़दीस से सुबूत़	15
		हम क्यूं परेशान हैं ?	16
(2) भयानक क़ब्रें	5	नमाज़ की ब-र-कतें	17
शराबी का अन्जाम	6	बे नमाज़ी का हौलनाक अन्जाम	18
ख़िन्ज़ीर नुमा मुर्दा	6	सर कुचलने की सज़ा	19
		क़ब्र में आग के शो'ले	20
आग की कीलें	7	हौलनाक कुंवां	21
आग की लपट में	7	जहन्नम में जाने का हुक्म	22
जवानी में तौबा का इन्आ़म	8	सियाह ख़च्चर नुमा बिच्छू	22
		बे नमाज़ी की सोह़बत से बचो !	23
(3,4) खोपड़ी में सीसा भरा हुवा था	8	क़ज़ा उ़म्री का आसान त़रीक़ा	24
(5) पुर अस्रार अन्धा	9	ग़ाफ़िल दरज़ी	29